P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-5* August - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

रायबरेली जनपद के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study of Educational Interests of Male and Female Students of Government and Non-Government Secondary Schools of Rae Bareli District

Paper Submission: 16/08/2020, Date of Acceptance: 26/08/2020, Date of Publication: 27/08/2020

अनिल कुमार
प्रवक्ता,
एस0बी0वी0आई0 कालेज,
मुरारमउ, रायबरेली,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

इस अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, शिक्षा के क्षेत्र में रूचियों का विशेष महत्व है। छात्र व छात्राओं की समस्या के निदान के लिए आवश्यक है कि उनकी रूचियों को जानने का प्रयास किया जाये क्योंकि रूचियां ही बताती है कि विद्यार्थी किस सीमा तक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न शिक्षाविदों के विचार से शिक्षण प्रक्रिया, स्थानीय परिस्थिति, वातावरण तथा शिक्षक एवं छात्र समुदाय के विविध गुणों एवं कमजोरियों पर निर्भर करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम परिकल्पना का निर्माण किया गया। परिकल्पना की स्वीकृति हेतु शून्य परिकल्पनाओं को निर्मित किया गया जिसका परीक्षण वर्णनात्मक प्रकार की शोध विधि से किया है इसमें छात्र व छात्राओं की शैक्षिक रूचि हेतु डॉ एस0पी0 कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित रूचि परिसूची का प्रयोग किया है। परिकल्पना परीक्षण के द्वारा निष्कर्ष निकला कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्राओं की शैक्षिक रूचियों में सार्थक अन्तर पाया गया है जिसमें छात्रों की शैक्षिक रूचियाँ अधिक पायी गयी है। दूसरा निष्कर्ष यह निकला कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की रूचियों में सार्थक अन्तर पाया गया है, जिसमें छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में शैक्षिक अभिरूचियाँ अधिक है।

In this study, comparative analysis of educational interests of boys &girlsstudentsof secondary schools has been done, interest in education is of special importance. In order to diagnose the problem of boys&girls students, it is necessary to make an effort to know their interests because interests only show the extent to which students can achieve their goals. In the view of various academics, the teaching process depends on the local situation, environment and the diverse qualities and weaknesses of the teacher and student community. The first hypothesis was formulated in the presented study. For acceptance of the hypothesis, zero hypotheses have been created which have been tested with descriptive type of research method. In this, the interest catalog created by Dr. S.P. Kulshrestha has been used for the academic interest of boys&girls students. The hypothesis test concluded that there has been a significant difference in the educational interests of the girls of secondary level schools in which the educational interests of the boys are found more. The second conclusion was that there has been found a significant difference in the interests of boys of government secondary schools and girl students of non-government secondary schools, in which there are more academic interests of girls among the students.

मुख्य शब्द :वातावरण, प्रतिक्रिया, परिवर्तनशील, कौशल, परिष्कृत, पुनर्निर्माण, सर्वोत्कृष्ट, अभिप्रेरित, शैक्षणिक रुचि अभिप्रेरणा, अनुसंधानकर्ता, संज्ञानात्मक, फलाकन, वस्तुनिष्ठता विभेदीकरण, प्रमाणीकरण, व्यापकता।

Environment, Feedback, Variable, Skills, Sophisticated, Reconstruction, Excellence, Reconstructed, Motivated, Educational Interest Motivation, Researcher, Cognitive, Falakan, Objective Differentiation, Authentication, Comprehension.

प्रस्तावना

शिक्षा का जन्म मानव के साथ हुआ है। मानव ने वातावरण के प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अनेक अनुभव प्राप्त किये तथा बाद में उन अनुभवों को व्यवहार के कुछ सामान्य सिद्धान्तों में परिवर्तित करके आने वाली पीढ़ी को सौंप दिया। वास्तव में शिक्षा सतत् अन्तःक्रिया है जो व्यक्तियों के मध्य एवं व्यक्तियों तथा बाह्य जगत के मध्य चलती रहती है। शिक्षा के द्वारा मानव की अभ्यास से परिवर्तनीशील शक्तियों को अच्छी आदतों व रूचियों तथा कलात्मक ढंग से निकाले गये साधनों द्वारा पूर्णता प्रदान की जाती है।

राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप नागरिकों के निर्माण करनें तथा विद्यार्थियों के समयानुकूल वांछनीय कौशलों एवं मूल्यों के विकास करनें की दृष्टि से शिक्षा की सशक्त भूमिका निर्विवाद है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सशक्त अभिकरण है। शिक्षा व्यक्ति की अभिवृद्धि एवं विकास तथा समाज की पूर्ति के उद्देश्य से निर्मित उद्योगो में से एक है। इसमें बहुत बड़ी संख्या में व्यक्तियों, अध्यापकों, अभिभावकों को देखते ही संसार के महान व्यक्तियों ने इसे धर्म, अपना कर्म व व्यवसाय के रूप में अंगीकार करके इसके गौरव में अभिवृद्धि की है।

प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट कृति शिशु को परिष्कृत कर मानव बनाने का कार्य शिक्षक का होता है। अतः योग्य शिक्षण व योग्य शिक्षक पर ही समाज का स्तर निर्भर करता है। इसके साथ ही जहां से शिक्षा ग्रहण की जाये, वहां के वातावरण, उपलब्ध भौतिक संसाधन, शिक्षण विधि, पुस्तकालय, प्रयोगशाला आदि की उचित व्यवस्था होना भी अनिवार्य है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने (1952–53) ने भी इसके महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है कि– ''शिक्षा के पुनर्निमाण में शिक्षक का अति महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए शिक्षक की व्यक्तिगत विशेषताएं, शैक्षिक योग्यताएं, व्यवसायिकप्रशिक्षण तथा विद्यालय और समाज में आपके द्वारा प्राप्त स्थान सभी का महत्व है।''

शिक्षण का अर्थ कक्षा कार्य मे बहुत ही व्यापक क्रियाओं से लिया गया है। यहां यह प्रश्न उठता है कि शिक्षक किस प्रकार से शिक्षण दे कि वह छात्रों के लिए अधिक प्रभावी हो।

प्राचीनकाल में तो शिक्षक अपनें छात्रों के ऊपर अपने विचारों, आदर्शों, मूल्यों को आरोपित करता था किन्तु आज मनोविज्ञान के प्रादुर्भाव के बाद भी शिक्षण कार्य यह समझकर किया जा रहा है कि सभी छात्रों का व्यक्तित्व व रूचि एक समान है। जबकि वास्तविकता इससे भिन्न है। वास्तव में शिक्षा की हर व्यवस्था, हर प्रक्रिया किसी न किसी रूचि की अपेक्षा करती है। अतः शिक्षार्थी जितना ज्ञानार्जन के लिए अभिप्रेरित होगा, शैक्षिक प्रक्रिया के सफल होने की सम्भावना उतनी ही अधिक होगी।

चूँकि सभी बालक एक दूसरे से भिन्न होते हैं। इसी व्यक्तिगत भिन्नता के कारण ही प्रत्येक छात्र की रूचि भी अलग–अलग होती है। अतः उनके सर्वांगीण विकास के लिए उनकी रूचियों को विकसित करना और उसके अनुरूप शिक्षण की व्यवस्था करना आवश्यक है।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

प्रस्तुत लघु शोध के अध्ययन का उद्देश्य रायबरेली जनपद के शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की शैक्षणिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना है। जिसकी विवेचना शोधार्थी द्वारा विभिन्न पुस्तकों एवं शब्दकोषों के अनुसार निम्न अवतरणों में दिया गया है–

शासकीय विद्यालय

शासकीय विद्यालयों से तात्पर्य ऐसे विद्यालयों से है जो सरकार द्वारा पूर्णतः अनुदान प्राप्त और मान्यता प्राप्त हो।

अशासकीय विद्यालय

अशासकीय विद्यालयों के अन्तर्गत ऐसे विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हो है किन्तु इन्हे सरकार द्वारा अनुदान नहीं प्रदान किया जाता है तथा इनका संचालन निजी प्रबन्ध तन्त्रों के हाथों में होता है।

माध्यमिक स्तर

यह प्राथमिक एवं विश्वविद्यालय शिक्षा को जोड़ने वाली कड़ी है। प्रस्तुत अध्ययन में 9वीं से 12वीं कक्षा तक के छात्र–छात्राओं को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

शैक्षणिक रूचि

विद्यार्थियों की शिक्षा में रूचि का अपना विशिष्ट स्थान है। ये मानव अभिप्रेरणा की शक्तिशाली स्रोत होती है और केन्द्रीय प्रयास को उकसाने और बनाये रखने की क्षमता रखती है। यह हमारे जीवन के ढाँचे को भी निर्धारित करती है।

रूचि को अंग्रेजी भाषा में Interest कहते हैं। जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के Interesse से हुई है और जिसका अर्थ है ''इट मेटर्स और इट कान्सर्न्स'' अर्थात जिस वस्तु से व्यक्ति का कोई सम्बन्ध होता है अथवा जो उसके लिए कोई महत्व रखती है उसमें व्यक्ति की रूचि होती है।

सामान्यतः रूचि को दो दृष्टिकोणो से समझा जा सकता है– वस्तुगत तथा व्यक्तिगत। जिस वस्तु में रूचि होती है उसकी विशेषताएं, उपयोगिता आदि जो व्यक्ति को उत्तेजना प्रदान करती है। रूचि के वस्तुगत पक्ष हैं केवल वस्तु की विशेषता से ही रूचि उत्पन्न नही हो सकती किसी वस्तु में एक व्यक्ति की बहुत सी रूचि हो सकती है और उसी में दूसरे व्यक्ति की बिल्कुल नही। अतएव रूचि व्यक्ति की आन्तरिक दशा, उसकी आवश्यकताओं आदि पर निर्भर होती है। इसी प्रकार व्यक्ति की आन्तरिक मनोदशाओं को रूचि का व्यक्तिगत पक्ष कहा सकता है। जब तक वस्तु व्यक्ति को आकर्षित नहीं करती तब तक उसमें रूचि उत्पन्न नही होती। इस आकर्षण में ही रूचि का अस्तित्व होता है। यह आकर्षण

की वस्तु की विशेषताओं तथा व्यक्ति की आवश्यकता दोनो को निर्धारित करता है।

प्रायः रूचि शब्द का प्रयोग संकुचित अर्थ में किया जाता है। कुछ लोग रूचि को मनोरंजन का प्रयास समझ लेते है। यह ठीक है कि जिस वस्तु में हमारी रूचि होती है वह हमें अच्छी लगती है किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि जिस वस्तु में हम रूचि ले रहे है वह मनोरंजक भी हो। रूचि एक आन्तरिक प्रेरणा शक्ति है जो हमें ध्यान देने के लिए, किसी वस्तु, व्यक्ति या क्रिया के प्रति प्रेरित करती है। रूचि एक मानसिक संरचना भी है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से अपना लगाव या सम्बन्ध प्रकट करता है। कुछ विशेष विद्वानों ने रूचि की निम्न परिभाषाएं दी है –

कनिंघम–''किसी व्यक्ति, वस्तु, क्रियाकलाप या व्यावसायिक क्षेत्र में रूचि वह प्रवृत्ति है जिसके द्वारा हम इसमें ध्यान देते है। उससे आकर्षित होते है। इसे पसन्द करते है और इसमें सन्तोष का अनुभव करते है। इस प्रकार रूचि एक लक्षण ही नही अपितु प्रवणता का मुख्य तत्व भी है।''

गिलफोर्ड (1964)–''किसी वस्तु व्यक्ति या प्रक्रिया से आकर्षित होने, उसे पसन्द करनें या उससे संतुष्टि पाने की ओर ध्यान केन्द्रित करनें वाली प्रवृत्ति को रूचि कहते हैं।''

प्रो0 स्टाउट–''रूचि व्यक्ति के अनुभवों का भावात्मक–क्रियात्मक पक्ष है।''

क्रो एवं क्रो–''रूचि वह प्रेरणा शक्ति है जो हमें किसी वस्तु या क्रिया की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है।''

मैक्डूगल–''रूचि छिपा हुआ अवधान है और अवधान रूचि का क्रियात्मक रूप है।''

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

जन्म के समय प्रत्येक बच्चे की मूल प्रवृत्तियां समान होती है। परन्तु बाद में उनकी मूल प्रवृत्तियों मे अन्तर आ जाता है। इसका प्रमुख कारण वंश, वातावरण, परिवेश व्यक्तिगत विभिन्नताएं आदि है। सामान्यतः रूचि का व्यक्ति की योग्यता से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता है। परन्तु जिन कार्यो में व्यक्ति की रूचि की होती है वह उसमें अधिक सफलता प्राप्त कर सकता है। रूचियाँ जन्मजात भी हो सकती है तथा अर्जित भी हो सकती है। परन्तु आयु व अनुभव के साथ–साथ रूचियों में अन्तर आता रहता है और इस अन्तर को समझना शिक्षण प्रक्रिया का अहम बिन्दु है। बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझना और उनकी रूचियों के अनुकूल शिक्षण व्यवस्था करना शिक्षा–तन्त्र का परम दायित्व है।

भारतीय शिक्षा के तीन प्रमुख स्तर है– प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चतर। जिसमें माध्यमिक स्तर की शिक्षा को शिक्षा जगत की रीढ़ माना जाता है क्योंकि विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक, क्रियात्मक तथा भावात्मक पक्षों का अधिकतम विकास इसी उम्र में सम्भव होता है। इस दृष्टिकोण से इस स्तर पर बालकों की शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में रूचि का विशेष महत्व है। समूह में बालकों को एक रूप में लाना तब तक असम्भव है जब तक कि सभी बालको की जाँच न कर ली जाये। छात्रों की समस्या के निदान के लिए यह आवश्यक है कि उनके बारे में जाना जाये और रूचियाँ ही यह बताती है कि छात्र किस हद तक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। व्यक्तिगत भिन्नता के कारण ही आज मनोवैज्ञानिक युग में रूचि को विशेष महत्व दिया जा रहा है। अतः शिक्षकों एवं अभिभावकों को यह चाहिए कि रूचियों के हिसाब से ही बालकों को अध्ययन कराया जाये।

साहित्यावलोकन

वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता उचित दिशा मे एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आयें है? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर

इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए गुड़, बार तथा स्केटस कहते है कि ''एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजो से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुंसधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजो से परिचित होना आवश्यक है।''

जान डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार–''व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करते है, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहीत एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।''

डब्ल्य0 आर0 बोर्ग के अनुसार–''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है।यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नही कर लेते तो हमारे कार्य की प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है अथवा यह पुनरावृत्ति भी हो सकता है।''

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण का उद्देश्य

शिक्षा के क्षेत्र मे विभिन्न प्रकार के अनुसंधान किये गये है किन्तु शिक्षा का क्षेत्र इतना व्यापक है कि सभी क्षेत्रों का अध्ययन कर पाना कठिन कार्य है। प्रस्तुत शोध मे उपलब्ध साहित्य के सर्वेक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य दर्शाये गये है–

1. यह सिद्धान्त विचार, व्याख्यायें एवं परिकल्पनाएं प्रदान करता है जो नई समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते है।
2. यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता है शोधकर्ता प्राप्त अध्ययनों के आधार पर शोध परिकल्पनायें बना सकता है।
3. यह समस्या के समाधान के लिए विधि, प्रक्रिया तथ्यों के साधन एवं सांख्यिकीय तकनीकी का सुझाव देता है।
4. यह परिणामों के विश्लेषीकरण में उपयोगी निष्कर्षों और तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है।

सम्बन्धित अध्ययनों से निकाले गये निष्कर्षो की तुलना की जा सकती है और यह समस्या के निष्कर्षो के लिये उपयोगी हो सकता है।

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण अनुसंधान के लिए सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करता है तथा विभिन्न सिद्धान्तो एवं निहित धारणाओं को समझनें में सहायता करता है। अनुसंधान के लिए किये गये क्षेत्र मे कितना और किस प्रकार का कार्य हो चुका है इसकी जानकारी देता है। किये गये अनुसंधान की सफलता तथा उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में पूर्वानुमान होता है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

रूचि से सम्बन्धित विदेशी अध्ययनों में सेंगल(1947) के कुछ पिछड़े हुए परिवार के छात्रों की रूचियों का अध्ययन किया, जिसमें शोधकर्ता ने बिने के बुद्धि परीक्षण द्वारा उन बालकों के शैक्षिक एवं बौद्धिक स्तर तथा रूचियों को ज्ञात करके पारिवारिक स्थिति, संख्या तथा व्यवहार के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि अधिक रूचि से अधिक अधिगम होता है।

कैम्पवेल (1952) ने प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित अपना शोध कार्य किया। जिसमें इन्होने छात्रो की रूचि को तीन प्रकार से विभक्त किया– उच्च, मन्द और औसत रूचि। इन तीनों का मिला जुला प्रभाव, घर का वातावरण, शैक्षिक योग्यता, आय आदि का प्रभाव बालक की रूचि को प्रदर्शित करनें में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस सन्दर्भ में इन्होने यह भी कहा कि छात्रों का शारीरिक तथ मानसिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि उनके माता–पिता की शिक्षा तथा आय में पर्याप्त वृद्धि की जाये।

नारायण (1968)– ने उच्च व निम्न उपलब्धियों की रूचियों, अभिवृत्तियों, अध्ययनो की आदतों पर शोध कार्य किया। जिसमें ऑकड़ों के विश्लेषण के पश्चात उच्च कोटि के उपलब्धकर्ताओं एवं निम्न कोटि के उपलब्धकर्ताओं के अध्ययन, रूचि एवं आदतों मे भिन्नता पाई गई जो 0.1 स्तर पर सार्थक थी।

किशोर छात्राओं की व्यावसायिक रूचि स्थायी नही होती। लेकिन ये छात्राएं गृह विज्ञान एवं सामाजिक व्यवसाय के प्रति अधिक रूचिवान थी।

राठौर पी0 (2005) ने +2 स्तर पर छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन मेरठ जनपद के 180 विद्यार्थियों पर किया। इस अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम थे–

1. लड़कियां कलात्मक एवं पारिवारिक व्यवसायों में अधिक रूचि लेती है जबकि लड़के हृदयग्राही व्यवसायों में अधिक रूचि रखते है।
2. लड़के एवं लड़कियां साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, वाणिज्य, रचनात्मक कृषि एवं सामाजिक आदि व्यवसाय में समान रूचि रखते है।
3. वे छात्र जो पब्लिक स्कूलों में पढ़ते है वे रचनात्मक व्यवसायों में अधिक रूचि लेते है तथा राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले किशोर वैज्ञानिक व्यवसायों में अधिक रूचि लेते है।
4. पब्लिक स्कूलों एवं राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले किशोर–किशोरी साहित्यिक, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, कृषि, कलात्मक, सामाजिक आदि व्यवसायों में समान रूचि लेते है।
5. विज्ञान विषयों के छात्र वैज्ञानिक व्यवसाय में तथा कला विषयों में अध्ययनरत छात्र वाणिज्यिक व्यवसायों में अधिक रूचि लेते है।

राजा के0 (2006) ने आगरा मण्डल के शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों के 850 छात्र–छात्राओं की व्यवसायिक रूचि का अध्ययन किया। उनके व्यक्तित्व, बुद्धि, सामाजिक, आर्थिक स्तर, के सम्बन्ध में परिकल्पना की भूमिका के सन्दर्भ में किया तथा पाया कि–

1. बुद्धिमान छात्र समस्या को सावधानी से हल लेते है तथा सफलता प्राप्त कर लेते है।
2. बुद्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति, छात्रों में त्रुटियों को कम करने में सहायता करती है।

कुमार एन0(2006) ने बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एवं सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की आर्थिक संचेतना और व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे–

1. व्याप्त आर्थिक संचेतना में सार्थक अन्तर होता है। स्पष्टतः स्ववित्त पोषित पृष्ठभूमि वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों की आर्थिक संचेतना अपेक्षाकृत श्रेष्ठ है।
2. स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरो की आर्थिक संचेतना पर उनकी शहरी तथा ग्रामीण पृष्ठभूमि का कोई प्रभाव नही पड़ता है।
3. स्ववित्त पोषित विद्यालयों की परिधि मे विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की आर्थिक संचेतनाएं कला संकाय की अपेक्षा अधिक सार्थक रूप से श्रेष्ठ हैं।

रोहित कुमार द्विवेदी (2007–08) नेमाध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बरेली शहर की छात्राओं की व्यावसायिक रूचियों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में एक अध्ययन किया। अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–?

1. छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी रूचियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
2. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाली छात्राओं की रूचि कृषि एवं वैज्ञानिक विषयों में अधिक रही।
3. निम्न आर्थिक सामाजिक स्तर वाली छात्राओं की रूचि कलाकार, सामाजिक एवं कार्यकारी क्षेत्रों मे अधिक रही।

विभिन्न शिक्षाविदों के विचार से शिक्षण प्रक्रिया स्थानीय परिस्थिति वातावरण तथा शिक्षक एवं छात्र समुदाय के विविध गुणों एवं कमजोरियों पर निर्भर करती है। यद्यपि पिछले पृष्ठों मे विविध अध्ययनों के निष्कर्ष से सार्थक परिणाम सामने आये है, फिर भी एक विशेष क्षेत्र का सर्वेक्षण करने से क्या भिन्न परिणाम हो सकता है? यह जानना एक लघु शोधकर्ता के लिए आवश्यक है। इसी उद्देश्य से वर्तमान शोध पत्र की प्रस्तुति की गयी।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

परिकल्पना पूर्व चिन्तन का पर्याय है। जब किसी सम्भावित सिद्धान्त की प्रदत्तों तथा प्रमाणों के आधार पर पुष्टि की जाती है तब उसे परिकल्पना कहते है। जिन प्रश्नों का उत्तर हम अपने अनुसन्धान के द्वारा पाना चाहते है उससे सम्बन्धित परिकल्पनाओं का निर्माण करते

हैं। परिकल्पना के द्वारा यह निश्चित हो जाता है कि हम करना क्या चाहते है। फिर उसी परिकल्पना का परीक्षण लक्ष्यों के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक रूचियो मे कोई सार्थक अन्तर नही होता है।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक रूचियों में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध समस्या को निम्न सीमाओं के अन्दर ही रखा है–

1. प्रस्तुत समस्या का अध्ययन क्षेत्र रायबरेली जनपद तक ही सीमित है।
2. इस शोध कार्य में माध्यमिक स्तर के छात्रों को ही शामिल किया गया है।
3. इस अध्ययन में समग्र रूप से 200 छात्रों को ही सीमित किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में जनपद रायबरेली के केवल 8 विद्यालयो का चयन किया गया है।
5. प्रत्येक विद्यालय से केवल 25 विद्यार्थियों को ही अध्ययन में शामिल किया गया है।

उपर्युक्त सीमाओं को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समस्या का वास्तविक एवं निरपेक्ष अध्ययन करने का सार्थक प्रयास किया है।

अनुसंधान की विधि

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य छात्रों की शैक्षिक रूचियों से सम्बन्धित है। इसलिए इस अनुसंधान कार्य की विधि वर्णनात्मक प्रकार की है।

जे0जे0 मोल के अनुसार, ''वर्णनात्मक अनुसंधान शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक व्यवहार में आता है। इसके सर्वे, नार्मेटिव सर्वे, स्टेटस और वर्णनात्मक अनुसंधान आदि अनेक नाम है। यह एक विस्तृत वर्गीकरण है जिसके अंतर्गत अनेक विशिष्ट विधियाँ तथा प्रक्रियायें आती है। उद्देश्य की दृष्टि से सब लगभग समान होती है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

इकाइयों के समूचे समूह के लिए जिसका मान निकालना अभीष्ट है जनसंख्या कहलाता है। जनसंख्या को कई प्रकारों में बांटा गया है– सजातीय, विजातीय, सीमित, असीमित, वास्तविक एवं काल्पनिक जनसंख्या।

प्रस्तुत समस्या के अध्यानार्थ न्यादर्श के विभिन्न विधियों में बहुस्तरीय यादृच्छिक न्यादर्श विधि को आधार बनाया गया है। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन मे आठ विद्यालयों के 200 छात्रों को लिया है। प्रत्येक विद्यालय से 25 छात्रों को लिया गया है।

शोध के उपकरण

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने उपकरणों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी भी शोध कार्य का निष्कर्ष बहुत कुछ प्रयोग किये गये उपकरणों पर भी निर्भर रहता है। परिकल्पना की प्रकृति के अनुरूप उपकरणों पर भी निर्भर करता है। परिकल्पना की प्रकृति के अनुरूप उपकरणों का चयन किया जाता है। प्रस्तुत शोध में मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग किया गया है। उपकरणों के चयन करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखा गया है–

1. विश्वसनीयता
2. वस्तुनिष्ठता
3. विभेदीकरण
4. प्रमाणीकरण
5. व्यापकता

उपरोक्त उपकरणों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने छात्रों की शैक्षिक रूचि हेतु डॉ0 एस0 पी0 कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित रूचि परिसूची का प्रयोग किया है।

रूचि परिसूची

इस शैक्षिक रूचि प्रपत्र का निर्माण डॉ0 एस0 पी0 कुलश्रेष्ठ द्वारा सर्वप्रथम 1965 में किया गया जिसका पूर्ण रूप से संसोधन 1970, 1975 तथा 1978 में हुआ। यह परीक्षण सात शैक्षिक क्षेत्रो कृषि, वाणिज्य, कला, गृह विज्ञान, मानविकी, विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्र से सम्बन्धित 98 शैक्षिक विषयों का अध्ययन करता है। यह परीक्षण व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनो रूप से प्रशासित किया जाता है। यद्यपि प्रशासन में कोई समय सीमा निर्धारित नही है, फिर भी परीक्षार्थी इसे 10–15 मिनट मे पूरा कर लेते हैं।

अभिरूचि परीक्षण का प्रशासन

इस अभिरूचि परीक्षण का प्रशासन व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनो रूपों मे किया जा सकता है। इस प्रपत्र हेतु निर्देश निम्न प्रकार से है–

इस प्रपत्र के प्रत्येक खाते में दो शैक्षिक विषय अंकित है। वेतन, प्रतिष्ठा, एवं उसके भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए आप प्रत्येक खाने मे अंकित दोनों शैक्षिक विषयों में से अपनी शैक्षिक रूचि के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कर सकते हैं।

अभिरूचि प्रपत्र का फलांकन

इस प्रपत्र में प्रत्येक क्षेत्र के अन्तर्गत अधिकतम (14) तथा न्यूनतम (0) प्राप्तांक है। प्रत्येक सही चिन्ह हेतु (1) अंक तथा गलत चिन्ह हेतु (0) अंक प्रदान किया गया है तथा सभी सही अंको का योग कर लिया जाता है।

अभिरूचि प्रपत्र का मानक एवं व्याख्या

प्रस्तुत प्रपत्र की व्याख्या गुणनात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार से की जा सकती है। गुणात्मक व्याख्या के अन्तर्गत मुख्य अभिरूचि क्षेत्र, द्वितीय अभिरूचि क्षेत्र, तृतीय अभिरूचि क्षेत्र एवं सबसे कम अभिरूचि क्षेत्र का निर्धारण पार्श्व चित्र में दिये गये प्राप्तांको के आधार पर क्रमिक रूप से किया जाता है। इसे सामान्य रिपोर्ट के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जाता है जबकि मात्रात्मक व्याख्या के अन्तर्गत उच्च रूचि के लिए प्राप्तांक 6 से 9 औसत रूचि हेतु 4 से 5 तथा औसत से नीचे रूचि के लिये प्राप्तांक 2 से 3 एवं निम्न रूचि हेतु प्राप्तांक 0 से 1 दिये गये हैं।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

सांख्यिकीय विधि अनुसंधान की मूलाधार होती है। यह वैज्ञानिक अध्ययन की वह कला है जिसक

अन्तर्गत प्रायः पूर्व निश्चित लक्ष्य के आधार पर तथ्यों का परिणाम मापन तथा आंकड़ो का संकलन किया जाता है ताकि शोध के विषय में अनुमानात्मक ज्ञान उपलब्ध हो सके। इस दृष्टि से अध्ययन की गयी विशेषताओ के परिचय की सुगमता हेतु निम्न सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया है–

मध्यमान तथा मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग सार्थक अन्तर जानने के लिए किया गया।

अध्ययन के परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयोंकी छात्रों–छात्राओं की शैक्षिक रूचियोंके मध्यमान, मानक विचलन तथा "CR" ; का मान

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	C.R.	सार्थकता
छात्र	100	57	16.8	2.22	6.71	0.01
छात्राएं	100	42.1	14.5			

सारणी मान– .05 स्तर पर 1.96, .01 स्तर पर 2.58

प्रस्तुत तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि छात्रों की शैक्षिक रूचियों का मध्यमान 57 तथा मानक विचलन 16.8 है। इसी प्रकार छात्राओं का मध्यमान 42.1 तथा मानक विचलन 14.5 है तथा इनके परिगणित CR का मान 6.71 है जो सार्थकता स्तर .05 तथा 0.1 के मानों 1.96 तथा 2.58 के मान से अधिक है। अतः हमारी परिकल्पना शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयो के छात्रों–छात्राओं की शैक्षिक रूचियों में कोई सार्थक अन्तर नही होता है, को अस्वीकृत किया जाता है।

अतः हम कह सकते है कि छात्र व छात्राओं की शैक्षिक रूचियों मे अन्तर पाया जाता है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि छात्रों का मध्यमान छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों की शैक्षिक रूचियाँ छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। इसका प्रमुख कारण निम्न है।

प्रायः छात्र शारीरिक और मानसिक रूप से छात्राओं की अपेक्षा ज्यादा क्रियाशील और सक्रिय होते है व अपनी रूचियाँ अधिक स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते है। सामाजिक वातावरण भी उनके पक्ष में होता है। उन्हे अपनी रूचि अनुरूप शैक्षिक विषय चुनने की स्वतन्त्रता रहती है और वे अपने विषय अनुरूप कही भी जाने के लिए छात्राओं की अपेक्षा अधिक स्वतंत्र होते है। अतः छात्राओं की अपेक्षा छात्रों की शैक्षिक अभिरूचियाँ अधिक विकसित होती है।

तालिका संख्या–2

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रोंएवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयोंकी छात्राओं की शैक्षिक रूचियोंके मध्यमान, मानक विचलन तथा "CR" ; का मान

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	C.R.	सार्थकता
छात्र	50	53.5	16.8	2.82	2.93	0.01
छात्राएं	50	61.8	10.57			

सारणी मान– .05 स्तर पर 1.96, .01 स्तर पर 2.58

उपरोक्त तालिका शासकीयमाध्यमिकविद्यालयोंके छात्र एवं अशासकीय माध्यमिकविद्यालयोंकेछात्राओं की शैक्षिक अभिरूचियों का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। तालिका में शासकीय छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि का मध्यमान 53.5 तथा मानक विचलन 16.88 है व अशासकीय छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि का मध्यमान 61.8 तथा मानक विचलन 10.57 है तथा इनकी टी प्राप्तांक का मान 2.93 है जो सार्थकता स्तर .05 तथा .01 के मानों 1.96 तथा 2.58 के मानों से अधिक है। अतः हमारी परिकल्पना कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचियों में कोई सार्थक अन्तर नही होता है को अस्वीकार किया जाता है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते है कि छात्र व छात्राओं की की शैक्षिक रूचियों में अन्तर पाया जाता है। तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं का मध्यमान छात्रों की अपेक्षा अधिक है। अतः स्पष्ट है कि शासकीय छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की शैक्षिक रूचियां अधिक है। इसका प्रमुख कारण यह है कि प्रायः शासकीय विद्यालयों में छात्रायें, छात्रों की अपेक्षा अधिक अनुशासनपूर्ण अध्ययन करती है तथा उनके अन्दर सामुदायिकता की भावना अधिक होती है। इसके अलावा जनपद के शासकीय बालिका विद्यालयों मे शैक्षिक स्तर अनुशासान व वहां का वातावरण शैक्षिक विकास के अनुकूल देखने को मिला है। अतः उनकी शैक्षिक रूचियों का विकास अधिक होता है।

परिकल्पना परीक्षण

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम परिकल्पना का निर्माण किया गया। परिकल्पना की स्वीकृति एवं अस्वीकृति हेतु शून्य परिकल्पनाओं को निर्मित किया गया जिसका परीक्षण करने के उपरान्त निम्नवत निष्कर्ष निकला–

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक रूचियों में सार्थक अन्तर पाया जाता है जिसमें छात्रों की शैक्षिक रूचियाँ अधिक पायी गई है।

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की रूचियों में सार्थक अन्तर पाया गया है। जिससे छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में शैक्षिक अभिरूचियां अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ

विद्यार्थियों में शैक्षिक आदतों के विकास के लिए जरूरी है कि माता–पिता और अध्यापक उन्हे अच्छा शिक्षा दर्शन दे। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि छात्रों की शैक्षिक रूचियाँ भिन्न होती है, जिससे एक विशेष प्रकार की समस्या खड़ी हो जाती है क्योंकि कोई भी शिक्षण विधि और शिक्षण प्रक्रिया तभी सफल मानी जाती है जबकि छात्र उस शिक्षण विधि से शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि जो भी कारक अपना अपना प्रभाव डालते है उन्हे पता लगाकर दूर किया जाये तथा इस क्षेत्र में उनकी रूचियों एवं अध्ययन की आदतों को प्राथमिकता दी जाये।

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर विद्यार्थियों की रूचियो को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उपयोगी सुझाव दिये जा सकते है जो उनके हित मे हो क्योंकि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नता के कारण अनकी अवहेलना नही की जा सकती। अतः प्रत्येक विद्यालय का यह कर्तव्य है कि हर सीखने वाले की रूचि एवं योग्यता के अनुसार ही शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करें। इसके लिए आवश्यक है कि

1. छात्र की योग्यता का सही पता लगाने के लिए प्रमापीकृत परीक्षणों द्वारा परीक्षण करके उनकी रूचि के अनुसार ही शिक्षा दी जाये।
2. रूचि के प्राकृतिक एवं अर्जित स्रोतो पर ही विद्यालय में उचित भौतिक तथा सामाजिक वातावरण प्रदान कर उनकी योग्यता को विकसित करने का प्रयास किया जाये।
3. प्रशिक्षित अध्यापकों, स्वच्छ प्रशासन, अध्ययन आदतों एवं रूचियों पर व्यक्तिगत ध्यान देकर छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि को अच्छा बनाने का प्रयास किया जाये।
4. छात्र–छात्राओं को विषय चयन एवं विद्यालय चयन की स्वतन्त्रता होनी चाहिए।
5. विद्यालय में विषयों के योग्य अध्यापक होने चाहिए व उससे सम्बन्धित सहायक सामग्रियाँ होनी चाहिए।
6. विद्यालयों में छात्र–छात्राओं के निर्देशन व परामर्श की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।
7. प्रत्येक विद्यालय में कैरियर काउन्सलर का पद होना चाहिए।
8. आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियो के लिए विशेष व्यवस्था होनी चाहिए।
9. समस्यात्मक विद्यार्थियों के लिए अलग से प्रावधान होने चाहिए।
10. छात्रों के उचित निर्देशन के लिए अभिभावकों के शिक्षण की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल सुभाष चन्द्र'लर्निंग स्टाइल ए न्यू एरिया आफ रिसर्च' जनरल आफ एजूकेशन रिसर्च एण्ड एक्सवेन्टन्स (1981)*
2. *अग्रवाल बाई0पी0'स्टेटेस्टिकल मैथड्स कनसेप्ट, एप्लीकेशन एण्ड कम्यूटेशन' स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लि0 दिल्ली (1990)*
3. *कारबान्ड इलउड सी0 'दि इनसाइक्लोपीडिया आफ एजूकेशन' आफ एजूकेशन (1971)*
4. *कपिल एच0 के0अनुसंधान विधियाँ हर प्रसार भार्गव प्रकाशन कचहरी घाट आगरा (1970)*
5. *कपिल एच0के0सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
6. *कुलश्रेष्ठ एस0 पी0'द मैनुअल आफ इन्टरेक्ट परिसूची' रूपा साइकोलाजी सेन्टर, वाराणसी (1971)*
7. *गुप्ता एस0पी0 'आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (1993)*
8. *आर0आर0 जोशी'शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के रूचियों में प्रशासनिक वैज्ञानिक एवं साहित्यिक अन्तर' पी0.एच0डी0 शिक्षा शास्त्र, एस0पी0यू0 (1983)*
9. *द्विवेदी अवनीश कुमार 'शहरी एवं ग्रामीण बच्चों की रूचि एवं आदतों का अध्ययन' अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, इ0वि0वि0*
10. *राय पारसनाथ'अनुसंधानपरिचय'लक्ष्मीनारायण प्रकाशन, आगरा*
11. *शर्मा सतीश चन्द्र'मनोविज्ञान तथा शिक्षा में परिमार्जित शब्दावली' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली (1974)*
12. *बुच एम0 बी0 थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन एन0सी0ई0आर0 टी0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली*
13. *बुच एम0 बी0 फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन एन0सी0ई0आर0 टी0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली*
14. *बुच एम0बी0 फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन एन0सी0ई0आर0 टी0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली*
15. *शर्मा आर0ए0 शिक्षा तथा मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन, लायल बुक डिपों, मेरठ 2008।*